Report on the 3rd International Conference of Young Buddhist Scholars (ICYBS)

22 AUGUST 2025

The Dr Ambedkar International Centre (DAIC), Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India, in collaboration with the International Buddhist Confederation (IBC) successfully hosted the 3rd International Conference of Young Buddhist Scholars (ICYBS) on 22nd August 2025. The central theme of the conference was ***"Wisdom Transmission in Buddha Dhamma in the 21st Century"***, focusing on the continuing relevance of Buddhist thought in addressing the challenges of the modern world.

The inaugural session of the conference began with a warm welcome extended to the dignitaries, marked by the traditional *Manglacharan* and the offering of *Khatak* and Mementos. The session opened with the Welcome Address delivered by Shartse Khensur Jangchup Choeden Rinpoche, Secretary General of the International Buddhist Confederation (IBC). Mr Yeshi Dawa**,** Senior Researcher at the 108 Peace Institute, gave a Special Presentation on matters relating to youth and the transmission of Buddha Dhamma. A brief but meaningful movie screening on the *Holy Relic Exposition in Vietnam* further enriched the session, offering participants a glimpse into the living traditions of Buddhist

heritage. The much-awaited Keynote Address was delivered by Prof KTS Sarao**,** an eminent historian and scholar of Buddhist Studies, who highlighted the historical and philosophical legacy of the Buddha's wisdom traditions and their relevance to contemporary society. The session concluded with the Chief Guest Address by Prof Rana Pratap Singh**,** Vice-Chancellor of Gautam Buddha University, who underlined the importance of academic engagement and institutional collaboration in fostering the study and practice of Buddha Dhamma.

The thematic sessions of the conference were divided into four panels, each addressing key aspects of *Wisdom Transmission in Buddha Dhamma*. **Panel 1** focused on *Dissemination and Social Transformation*, with speakers from India, Myanmar, Cambodia, and Sri Lanka discussing Emperor Ashoka's role in spreading Buddha Dhamma, the revival of Buddhism in Korea, the socio-religious responsibilities of Khmer monks, Mahinda Thero's mission to Sri Lanka, and Theravāda perspectives on *Vedanā*. **Panel 2**, on *Embodied Wisdom*, highlighted the Guru–Śiṣya Paramparā and its relevance in modern life, featuring Cambodian studies on Buddhism and social development, Vietnamese insights on the Five Khandhas, applications of the *Bhaddekaratta Sutta* for mental well-being, and the transformative role of *paññā* (wisdom). **Panel 3**, dedicated to *Technology and AI*, explored ethical challenges of artificial intelligence in relation to Buddhist values, including the need for ethical AI in heritage preservation, the application of the Middle Path to innovation, issues arising from the absence of *cetanā* (intention) and *karuṇā* (compassion), and reflections on *anattā* (non-self) in the age of AI.

Similarly, **Panel 4** examined *Youth, Education, and Dhamma*, stressing the role of Buddhist academic institutions and the *Sangha* as custodians of wisdom, with case studies from India, Vietnam, Cambodia, and Russia, while also highlighting the importance of youth engagement and global Buddhist heritage.

The conference concluded with several key outcomes that underscored its significance. It reaffirmed that wisdom transmission is a living tradition, sustained through practice, education, and ethical conduct, ensuring that the essence of *Dhamma* remains vibrant across generations. A strong emphasis was placed on bridging tradition and technology, highlighting the urgent need for ethical

frameworks in artificial intelligence and digital tools to safeguard Buddhist heritage.

Overall, the 3rd International Conference of Young Buddhist Scholars highlighted the timeless relevance of the Buddha's teachings in the face of 21st-century challenges, affirming their role as a universal guide for ethical living, technological responsibility, and social harmony. The event formally concluded with a Vote of Thanks delivered by Prof (Dr) Ravindra Panth, marking the close of an enriching and impactful gathering.

युवा बौद्ध विद्वानों के तृतीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ICYBS) पर प्रतिवेदन

22 अगस्त 2025

भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अंतर्गत डॉ. अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (डीएआईसी) ने अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी) के सहयोग से 22 अगस्त 2025 को युवा बौद्ध विद्वानों के तीसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीवाईबीएस) का सफलतापूर्वक आयोजन किया। सम्मेलन का मुख्य विषय "21वीं सदी में बुद्ध धम्म में ज्ञान का संचरण" था, जो आधुनिक विश्व की चुनौतियों का समाधान करने में बौद्ध विचारों की निरंतर प्रासंगिकता पर केंद्रित था।

सम्मेलन के उद्घाटन सत्र की शुरुआत गरिमामयी अतिथियों के हार्दिक स्वागत से हुई, जिसमें परंपरागत मंगलाचारण तथा खातक और स्मृति-चिह्न अर्पण के साथ आयोजन का शुभारंभ किया गया। सत्र का उद्घाटन अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध महासंघ (IBC) के महासचिव शार्त्से खेनसुर जंगचुप चोएदेन रिनपोछे के स्वागत भाषण से हुआ। इसके बाद 108 पीस इंस्टीट्यूट के वरिष्ठ शोधकर्ता श्री येशी दावा ने युवा वर्ग और बुद्ध धम्म के संप्रेषण से संबंधित विषयों पर विशेष प्रस्तुति दी। इसके उपरांत, वियतनाम में पवित्र अवशेष प्रदर्शनी पर एक संक्षिप्त और सार्थक चलचित्र प्रदर्शन किया गया, जिसने प्रतिभागियों को जीवित बौद्ध धरोहर की झलक प्रदान की। बहुप्रतीक्षित मुख्य वक्तव्य प्रख्यात इतिहासकार एवं बौद्ध अध्ययन के विद्वान प्रो. के.टी.एस. सराओ ने प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने बुद्ध के ज्ञान परंपरा की ऐतिहासिक और दार्शनिक विरासत तथा उसकी समकालीन प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। सत्र का समापन गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राणा प्रताप सिंह के मुख्य अतिथि संबोधन से हुआ, जिसमें उन्होंने बुद्ध धम्म के अध्ययन और अभ्यास को प्रोत्साहित करने हेतु शैक्षणिक सहभागिता और संस्थागत सहयोग के महत्व पर बल दिया।

सम्मेलन के विषयक सत्रों को चार पैनलों में विभाजित किया गया, जिनमें बुद्ध धम्म में ज्ञान-संप्रेषण के विभिन्न आयामों पर विमर्श हुआ। पैनल 1 का केंद्र *प्रसार और सामाजिक परिवर्तन* रहा, जहाँ भारत, म्यांमार, कंबोडिया और श्रीलंका के वक्ताओं ने सम्राट अशोक की बुद्ध धम्म के प्रसार में भूमिका, कोरिया में बौद्ध धर्म के पुनरुत्थान, खमेर भिक्षुओं की सामाजिक-धार्मिक जिम्मेदारियाँ, महिंद थेरो का श्रीलंका में मिशन तथा थेरवाद परंपरा में *वेदनā* की भूमिका पर चर्चा की। पैनल 2, जिसका विषय *अंगीकृत ज्ञान* था, ने गुरु–शिष्य परंपरा और उसकी आधुनिक प्रासंगिकता पर बल दिया, जिसमें कंबोडिया से बौद्ध धर्म और सामाजिक विकास के अध्ययन, वियतनाम से *पंचस्कन्ध* पर अंतर्दृष्टियाँ, *भद्देकरत्त सुत्त* के मानसिक कल्याण हेतु प्रयोग, और *पञ्ञा* (प्रज्ञा) की रूपांतरणकारी भूमिका पर विचार प्रस्तुत किए गए। पैनल 3, जो *प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)* को समर्पित था, ने बौद्ध मूल्यों के संदर्भ में एआई की नैतिक चुनौतियों की जांच की, जिसमें धरोहर संरक्षण हेतु नैतिक एआई की आवश्यकता, नवाचार में *मध्यम मार्ग* का प्रयोग, *चेतना (cetanā)* और *करुणा (karuṇā)* के अभाव से उत्पन्न समस्याएँ, तथा एआई युग में *अनात्मा (anattā)* की अवधारणा पर चिंतन सम्मिलित था।

इसी प्रकार, पैनल 4 ने *युवा, शिक्षा और धम्म* पर केंद्रित रहते हुए, बौद्ध शैक्षणिक संस्थानों और संघ की भूमिका को ज्ञान के संरक्षक के रूप में रेखांकित किया। इसमें भारत, वियतनाम, कंबोडिया और रूस के केस-अध्ययन प्रस्तुत किए गए तथा युवा सहभागिता और वैश्विक बौद्ध धरोहर को सुदृढ़ करने के महत्व पर विशेष बल दिया गया।

सम्मेलन का समापन कई प्रमुख निष्कर्षों के साथ हुआ, जिन्होंने इसके महत्व को रेखांकित किया। इसने इस बात की पुष्टि की कि ज्ञान का संचरण एक जीवंत परंपरा है, जो अभ्यास, शिक्षा और नैतिक आचरण के माध्यम से निरंतर बनी रहती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि धम्म का सार पीढ़ियों तक जीवंत बना रहे। परंपरा और प्रौद्योगिकी के बीच सेतु निर्माण पर ज़ोर दिया गया, और बौद्ध विरासत की रक्षा के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल उपकरणों में नैतिक ढाँचों की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।

समग्र रूप से, युवा बौद्ध विद्वानों के तृतीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन ने इक्कीसवीं शताब्दी की चुनौतियों के संदर्भ में बुद्ध के उपदेशों की शाश्वत प्रासंगिकता को रेखांकित किया और उन्हें नैतिक जीवन, प्रौद्योगिकीय उत्तरदायित्व तथा सामाजिक सद्भाव के लिए एक सार्वभौमिक मार्गदर्शक के रूप में स्थापित किया। कार्यक्रम का औपचारिक समापन प्रो. (डॉ.) रविन्द्र पंथ द्वारा प्रस्तुत आभार ज्ञापन के साथ हुआ, जिसने इस समृद्ध और प्रभावशाली आयोजन को सफलतापूर्वक पूर्णता प्रदान की।

Important Links:

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2159984

https://x.com/DDIndialive/status/1959105819594690981

https://x.com/airnewsalerts/status/1959081820575670359

https://x.com/PIBCulture/status/1958926911326822763

DR AMBEDKAR INTERNATIONAL CENTRE
MINISTRY OF SOCIAL JUSTICE AND EMPOWERMENT
15 JANPATH, NEW DELHI 110001